International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 632-634

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 632-634
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2015
Accepted: 21-09-2015

वन्दना देवी
शोध कर्त्री
संस्कृत विभाग
हि० प्र० विष्वविद्यालय
षिमला–5

Correspondence
वन्दना देवी
शोध कर्त्री
संस्कृत विभाग
हि० प्र० विष्वविद्यालय
षिमला–5

सतीविजयः में भौगोलिक स्थिति

वन्दना देवी

किसी देष की पहचान उसकी भौगोलिक आकृति से तथा उस देष के रहने वाले लोगों एवम् उनकी जीवन–व्यवस्था से बनती है। भारत अतिप्राचीन काल से एक अलग भौगोलिक इकाई रहा है। आधुनिक भारत के विषाल भौतिक विस्तार, प्राकृतिक विभिन्नताओं तथा प्रवास के विभिन्न स्त्रोतों ने भारत को 'विविधताओं के देष' की संज्ञा प्रदान की है। आधुनिक भारत विष्व के मानचित्र पर उत्तरी गोलार्द्ध में $8^0.4'$ तथा $37^0.6'$ अक्षांष के बीच है। यह $68^0.7'$ पूर्वी देषान्तर तथा $99^0.25'$ पूर्वी देषान्तर के बीच पड़ता है।[1] क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विष्व का सातवां देष है[2] तथा इसका क्षेत्रफल 3,287,263 वर्ग किलोमीटर है।[3] कुल जलीय सीमा 751.6 वर्ग किलोमीटर तथा उसमें मुख्य धरातलीय जलीय सीमा 6200 वर्ग किलोमीटर है। भू–भाग सीमा 15,200 वर्ग किलोमीटर है।[4]

भौगोलिक स्थिति

भूगोल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – भू और गोल। 'भू' शब्द का अर्थ है – पृथ्वी व 'गोल' शब्द का अर्थ है – चक्र। इस प्रकार भूगोल शब्द का अर्थ हुआ पृथ्वी का गोल रूप।[5] प्राचीन भारतवर्ष नौ द्वीपों में विभक्त था – इन्द्रदीप, केशरूमान, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप सौम्य, गन्धर्व, वरुण तथा कुमारीद्वीप।[6] कुमारीद्वीप को ही भारतवर्ष स्वीकृत किया गया है, अतः यही देश हमारी जन्मभूमि है।[7] भरत ने कुमारीद्वीप (भारत) को अपनी पुत्री कुमारिका को दिया।[8] 'सतीविजयः' महाकाव्य में उपलब्ध सूचना के आधार पर नदियों, वनों, जनपदों, पर्वतों, जीव–जन्तुओं का तत्कालीन 'सतीविजयः' महाकाव्य में वर्णन किया गया है। जो निम्न है :

8.1 जनपद

किसी राज्य की वह समस्त भूमि जनपद कहलाती है जिसमें केवल राजधानी का ही क्षेत्र परिगणित न हो बल्कि राजधानी के अतिरिक्त बाकी संपूर्ण राज्य भी सम्मिलित हो5 जनपद से तात्पर्य किसी देश के उस अंश या भाग से है जिसमें एक ही तरह की बोली बोलने वाले लोग बसते हों, जैसे सूबा आदि।[9] काशिकाकार ने लिखा है कि एक जनपद की सीमा दूसरा जनपद ही हो सकता है गाँव नहीं।[10] 'सतीविजयः' में अनेकों जनपदों का वर्णन किया गया है जिनमें से भारत, हरिद्वार और कोसल देश प्रमुख है। इनका वर्णन निम्न प्रकार से है :

भारत

समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है, वह भारतवर्ष है तथा उसमें भरत की सन्तान निवास करती है।[11] इस पृथ्वी पर भारतवर्ष को ही कर्मों को करने की भूमि बतलाया गया है। यह कर्मों को करने की भूमि है और फल प्राप्त करने की भी यही भूमि है। स्वर्ग एवं नरक को पाने की भी यही भूमि हैं।[12] नारदपुराण में वर्णन आया है कि देवतागण भी इस देश में जन्म पाने के लिए तरसते रहते हैं। वह यही सोचते हैं कि कब हम अनेकों प्रकार के दान, यज्ञ और तपस्या भारत में करके फिर अन्त समय में नित्यानन्द स्वरूप संसार के ईश्वर भगवान् विष्णु को प्राप्त करेंगे।[13] 'सतीविजयः' महाकाव्य में पुष्पक नामक विमान पर बैठकर रावण का भारत देश को निहारने का उल्लेख है।[14] बाज़ारों में मोती एवं मणियों की चमक तथा सुवर्ण एवं चाँदी के ढेर पड़े रहते हैं। भारत धन–धान्य का भण्डार तथा वेद की पाठशाला था।[15]

कोसल

भारत के सोलह महाजनपदों में कोसल भी सम्मिलित था। इसके पश्चिम में कुरु पांचाल तथा पूर्व में विदेह था।[16] कोसल लोग सूर्यवंशी मनु के वंशज थे। इनके पूर्वज इक्ष्वाकु थे, इसलिए कोसल को इक्ष्वाकु जनपद भी कहते थे।[17] बुद्ध के समय में कोसल एक शक्तिशाली राज्य था किन्तु तृतीय शताब्दी ईस्वी पूर्व में कोसल मगध के अन्तर्गत आ चुका था।[18] कोसल का दूसरा नाम अवध भी है।[19] कवि ने महाकाव्य में कोसल देश का वर्णन किया है।[20]

हरिद्वार

कवि जयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' महाकाव्य में राजा अज द्वारा पतितपावनी, कलकलनिनादिनी, मोक्षदायिनी, पापनाशिनी, ईशचरणोद्भूता, अमृतसलिला, दूध के समान सफेद पानी वाली अमृतसलिला नदी से जल लाने हेतु पाँच सैनिकों को भेजने का वर्णन किया है।[21]

नगर

नगर से तात्पर्य मनुष्यों की उस बस्ती से है जो गाँव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है जिसमें अनेक जातियों और पेशों के लोग रहते हैं, जैसे – पुर तथा शहर इत्यादि।[22] जनपद की भौगोलिक इकाई के अन्तर्गत मनुष्यों के रहने के स्थान नगर और ग्राम कहलाते हैं।[23] 'सतीविजयः' में कविजयनारायण यात्री ने अनेकों नगरों का वर्णन किया है। जिनमें से अमरावती, अलकानगरी, अयोध्या लङ्कापुरी आदि प्रमुख है। इनका वर्णन निम्न प्रकार से है :

अमरावती

जिस नगरी में देवता लोग रहते हैं। इसे इन्द्रपुरी भी कहते हैं।[24] कृष्णा नदी के किनारे स्थित अमरावती अब एक प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल होने के साथ–साथ भारतीय कला के इतिहास में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह स्थल आन्ध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले के उत्तर में लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर है।[25] कवि ने 'सतीविजयः' महाकाव्य में अयोध्या नगरी को अमरावती का उपहास करने वाली कहा है।[26]

अलकानगरी

यह कुबेर की राजधानी का नाम था।[27] यह यक्षों के स्वामी कुबेर की राजधानी थी।[28] कविजयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' में अलकानगरी को भी सुन्दर कहा है।[29] यह नगरी बहुत सुन्दर थी तथा इसे देवों की नगरी के रूप में जाना जाता था।

लंकापुरी

समुद्र के उस पार दक्षिण दिशा में त्रिकूट पर बसी लंका राक्षसाधिपति रावण की प्रसिद्ध राजधानी थी।[30] कविजयनारायण यात्री उल्लेख करते हैं कि समुद्र जिसकी खाई है, मनुष्य तथा पशु–पक्षियों से अगमनीय, गगनचुम्बी सुनहरे भवनों वाली, सुवर्णमयी कान्ति से चमकती हुई, भगवान् शिव द्वारा निर्मित, सुन्दर उद्यानों वाली सोने की नगरी लंका है।[31]

अयोध्यापुरी

अयोध्या भारतवर्ष की पवित्र सात महानगरियों में से एक है। आधुनिक फैजाबाद के आसपास के क्षेत्र का पुराना नाम अयोध्या है, जहाँ पहले सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी।[32] यह प्राचीन नगरी सरयू नदी के किनारे पर स्थित है।[33] जातक में अयोध्या नगरी का उल्लेख हुआ है कि यह साकेत के समीप स्थित थी।[34] वाल्मीकि के अनुसार कोसल नाम से प्रसिद्ध एक बहुत बड़ा जनपद है, वह जनपद धनधान्य से सम्पन्न, सुखी और समृद्धिशाली है, उसी जनपद में अयोध्या नाम की नगरी है, जो समस्त लोकों में विख्यात है, उस पुरी को स्वयं मनु ने बनवाया और बसाया था।[35] अयोध्या नगरी सरयू नदी के किनारे पर स्थित थी।[36] वहाँ के भवन बहुत सुन्दर बने हुए थे।[37] कोसल अयोध्या का पड़ौसी राज्य था। जो बाद में अयोध्या के अन्तर्गत ही आ गया था।

ग्राम

नगर की सीमा के समीप ही कृषकों, ग्वालों आदि के ग्राम बनाए जाते थे।[38] मनुष्यों का समूह या उनके रहने का स्थान ग्राम कहलाता है।[39] कवि जयनारायण यात्री ने ग्राम और नगर पृथक्–पृथक् माने हैं।[40]कृषि तथा कृषकों के वर्णन से गाँवों तथा ग्रामीण का उल्लेख किया गया है।[41]

पर्वत

पत्थरों आदि का बना हुआ शृंखलाओं के रूप में फैला हुआ तथा ऊँची चोटियों वाला वह भूखण्ड जो आस–पास की भूमि से सैकड़ों–हजारों फुट ऊँचा होता है तथा जो भूगर्भ की प्राकृतिक शक्तियों से निकलने वाले मल से बनता है[42] पर्वत कहलाता है। कवि जयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' में हिमालय पर्वत का वर्णन किया है :

हिमालय पर्वत

हिमालय 'ऋग्वेद'[43] में 'हिमवन्त्' नाम से वर्णित है। इसके एक शिखर का नाम 'मूंजवत्' है जहाँ पर सोमलता पाई जाती है।[44] 'केनोपनिषद्' में इसको हिमवान् तथा इसकी पुत्री उमा को 'हैमवती' नाम से वर्णित किया है।[45] 'सतीविजयः' महाकाव्य में हिमालय देवताओं की आत्मा, आकाश को छूने वाली चोटियों से शोभायमान, हिमाच्छादित श्वेत चोटियों से रमणीय ऊँची–नीची भूमि वाले चमरी हिरणियों से सनाथ, यक्ष और किन्नरों की क्रीड़ास्थली, गंगा–यमुना का उद्गम स्थल, चारों धामों का स्थान, अनेक जीवनोपयोगी दवाइयों का जनक तथा पर्वतों का राजा है।[46] हिमालय पर्वत के सबसे ऊँचे बर्फ से शोभायमान गौरीशंकर नामक शिखर का भी 'सतीविजयः' में वर्णन है।[47]

अरण्य

ऐसा स्थान जहाँ बहुत दूर तक हर जगह पेड़ ही पेड़ हों वन कहलाता है।[48] आर्य वैदिक गाँव और जनपदों में निवास करते थे। वहाँ गाँव और जनपदों से बाहर वन भी होते थे। वनों से समिधाएँ तथा लकड़ियाँ प्राप्त होती थीं।[49] कविजयनारायण यात्री विरचित 'सतीविजयः' में वर्णित कुछ हरियाली वाले फलों तथा फूलों से युक्त वन्य प्रदेशों का उल्लेख है।[50] वन बहुत घने होते थे। जिनमें भूमि पर प्रकाश भी नहीं पहुँचता था। विविध वन्य पशु उसमें रहते थे।[51] नदियों तथा सरोवरों के तीर पर अनेक तपस्वी तपस्यारत होते थे।[52] सप्तम परिच्छेद में वन में रहने वाले पशु–पक्षियों तथा जगत् से विरक्ततपस्वियों के आश्रमों आदि का उल्लेख किया गया है।[53] अष्टम परिच्छेद में भी हरे–भरे वनों का वर्णन किया गया है।[54]

नदियाँ

कविजयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' में प्रमुख नदियों का उल्लेख किया है जो निम्नलिखित हैं :

गंगा

संस्कृत वाङ्मय में गंगा एक पवित्र और सम्माननीय नदी देवी के रूप में पूजनीय रही है। रामायण के अनुसार गंगा सब नदियों में श्रेष्ठ है।[55] कविजयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' महाकाव्य में गंगा का उद्गम स्थल हिमालय पर्वत को बतलाया गया है।[56] दूध–सा धवल पापनाशिनी गंगा का मोक्षदायक ईश चरणों से उत्पन्न अमृतमय जल पावन माना जाता था।[57] राज्याभिषेक के अवसर पर गंगा आदि पवित्र नदियों के जल से अभिषिक्त होने वाले का अभिषेक किया जाता था।[58]

यमुना

यमुना उत्तर भारत की प्रसिद्ध नदी है।[59] हिमालय के यमुनोत्री पर्वत से निकलकर यमुना शिवालिक नग–श्रेणी की घाटी और गढ़वाल से होकर मैदान में उतरती है।[60] 'सतीविजयः' में कवि यात्री ने यमुना को नीले पानी वाली और सूर्यपुत्री कहा है।[61] इसका उद्गम हिमालय पर्वत है।[62] राज्याभिषेक के अवसर पर इस नदी के जल से अभिषेक किया जाता था।[63]

सरयू

प्राचीन प्रसिद्ध नगरी अयोध्या सरयू नदी के तट पर बसी है।[64] कवि जयनारायण यात्री ने 'सतीविजयः' महाकाव्य में सरयू नदी और उसके पवित्र जल का उल्लेख किया है।[65] राजा अज के दान के संकल्प से सरयू नदी के पानी के बढ़ने का वर्णन हुआ है।[66] कवि जयनारायण यात्री के महाकाव्य 'सतीविजयः' में इतना ही भौगोलिक वर्णन मिलता है।

सन्दर्भ

1. Aruna Deshpande, India, A Travel Guide, Page 1
2. तरुण गोयल, सामान्य ज्ञान, पृष्ठ 32 भारत 2001, पृष्ठ 1
3. Pranseth, India, A Traveller's companion : pages 5
4. Aruna Deshpande, India, A travel Guide : page 1
5. Sanskrit English Dictionary, H.H. Wilson : Page 533
   Sanskrit English Dictionary, V.S. Apte : page 409
   Sanskrit English Dictionary, M.M. willieims : page 760
6. मार्कण्डेय पुराण : 57.5–7, द्रष्टव्य विष्णु पुराण : 2.3.6–7, कूर्म पुराण : 47.22–27, अग्निपुराण : 118.3–5, काव्य मीमांसा : 92.7–9
7. वाराह पुराण : अध्याय 85, पृष्ठ 365, स्कन्द पुराण : 7.1.179, काव्यमीमांसा : 92.7–9
8. स्कन्द पुराण : 1.2.39.110
9. मानक हिन्दी कोष, तीसरा खण्ड : पृष्ठ 181
10. वही, उपर्युद्धृत : 181
11. काषिका : 4.2 124
12. अग्नि पुराण : 1.50.1
13. ब्रह्म पुराण : 1.19.2
14. नारद पुराण : 1.3.51
15. सतीविजय : 1/पृष्ठ 5
16. वही : 1/पृष्ठ 5
17. पतंजलिकालीन भारत, डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री : पृष्ठ 106
18. वही : उपर्युद्धृत
19. जैन संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय समाज, डॉ० मोहन चन्द : पृष्ठ 523
20. वही : उपर्युद्धृत
21. सतीविजय : 1/पृष्ठ 13,
    वही : 7/पृष्ठ 160–173,
    वही : 8 /पृष्ठ 183–197
22. वही : 6/ पृष्ठ 150–152
23. नवल, नालन्दा विषाल शब्द सागर : पृष्ठ 664
    नगेन्द्रनाथ वसु, हिन्दी विष्वकोष : पृष्ठ 336
    कालिका प्रसाद, बृहत हिन्दी कोष : पृष्ठ 683
24. वासुदेव शरण अग्रवाल, पाणिनिकालीन भारतवर्ष : पृष्ठ 76
25. राजबली पाण्डेय, हिन्दू धर्मकोष : पृष्ठ 45
26. भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल, डॉ० प्रियसेन सिंह : पृष्ठ 86
27. सतीविजय : 2/पृष्ठ 22,
    वही : 6/ पृष्ठ 143
28. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ : पृष्ठ 134
29. संस्कृत हिन्दी कोष : पृष्ठ 101
30. सतीविजय : 2/पृष्ठ 22 वही : 6/पृष्ठ 143
31. वाल्मीकि युगीन भारत, मंजुला जयसवाल : पृष्ठ 78
32. सतीविजय :1/पृष्ठ 2–4
33. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोष, पहला खण्ड : पृष्ठ 121
34. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, भारतीय इतिहास कोष : पृष्ठ 16
35. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव, पालि जातक एक सांस्कृतिक अध्ययन : पृष्ठ 34
36. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण : 1.1.5.5–6
37. सतीविजय : 2/पृष्ठ 19–20
38. वही : 2/पृष्ठ 24–25
39. जैन संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय समाज, डॉ० मोहन चन्द्र : पृष्ठ 252
40. मानक हिन्दी कोष, दूसरा खण्ड, रामचन्द्र वर्मा : पृष्ठ 151
41. सतीविजय : 8/पृष्ठ 182
42. वही : 7/पृष्ठ 171
    वही : 5/पृष्ठ 104,106
43. मानक हिन्दी कोष, तीसरा खण्ड : पृष्ठ 439
44. ऋग्वेद : 10.121.4
45. वही : 10.34.1
46. केनोपानिषद : 3.12
47. सतीविजय : 1/पृष्ठ 7
    वही : 4/पृष्ठ 72
    वही : 6/पृष्ठ 152
    वही : 1/पृष्ठ 7–8,25
48. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोष, पांचवा खण्ड : पृष्ठ 10
49. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, ब्रज बिहारी चाबे : पृष्ठ 530
50. सतीविजय : 2/पृष्ठ 32
51. वही : 4/ पृष्ठ 72–83
52. वही : 4/ पृष्ठ 73–75
53. वही : 7/ पृष्ठ 166
54. वही : 8/ पृष्ठ 183
55. वही : 8/ पृष्ठ193
56. रामायण : 1.34.16–21
57. सतीविजय : 1/पृष्ठ 7
58. वही : 6/ पृष्ठ 151–152
59. वही : 6/ पृष्ठ 156
60. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा तथा पं० तारिणीष झा : पृष्ठ 952
61. पतंजलिकालीन भरत, डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री : पृष्ठ 87
62. सतीविजयः 1/पृष्ठ 150
    वही : 1/पृष्ठ 7
63. वही : 6/ पृष्ठ 150
64. पतंजलिकालीन भारत, डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री : पृष्ठ 87
65. सतीविजय : 2/पृष्ठ 20
66. वही : 2/पृष्ठ 24